प्र. आश्विन कृष्ण पक्ष

3 सितम्बर से 17 सितम्बर 2020

ऋतु
शरद सूर्य
दक्षिणायन

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	03.09.20	6.04	18.39
अष्टमी	10.09.20	6.07	18.29
अमावस्या	17.09.20	6.11	18.20

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र संचार	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	गुरू	पूर्वाभाद्र	03.09.20	मीन 14.16	पंचक, पितृपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध
द्वितीया	शुक्र	उत्तराभाद्र	04.09.20	मीन	पंचक, द्वितीया का श्राद्ध, अमृत सिद्धि व सर्वार्थ सिद्धि योग 23.27 से 30.05 तक
तृतीया	शनि	रेवती	05.09.20	मेष 26.20	पंचक समाप्त 26.20, तृतीया श्राद्ध, चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 20–39, शिक्षक दिवस
चतुर्थी	रवि	अश्विनी	06.09.20	मेष	चतुर्थी का श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.05 से 29.23 तक
पंचमी	सोम	भरणी	07.09.20	मेष	पंचमी का श्राद्ध
षष्ठी	मंगल	भरणी	08.09.20	वृष 15.7	षष्ठी का श्राद्ध सर्वार्थ सिद्धि योग 08.25 से 30.07 तक
सप्तमी	बुध	कृत्तिका	09.09.20	वृष	सप्तमी का श्राद्ध, रोहिणी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.07 से 30.07 तक
अष्टमी	गुरू	रोहिणी	10.09.20	मि. 26.31	अष्ट. का श्राद्ध, जीवित पुत्रिका व्रत, कालाष्टमी
नवमी	शुक्र	मृगशिरा	11.09.20	मिथुन	नवमी का श्राद्ध, मातृ नवमी सौभाग्यवती का श्राद्ध
दशमी	शनि	आर्द्रा	12.09.20	मिथुन	दशमी का श्राद्ध
एकादशी	रवि	पुनर्वसु	13.09.20	कर्क 10.31	इंदिरा एकादशी व्रत सबका, ग्यारस श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग 16.33 से 30.09 तक
द्वादशी	सोम	पुष्य	14.09.20	कर्क	द्वादशी श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.09 से 15.51 तक
त्रयोदशी	मंगल	आश्लेषा	15.09.20	सिंह 14.24	त्रयोदशी का श्राद्ध, भौमप्रदोष व्रत, शिवरात्रि सर्वार्थ सिद्धि योग 06.10 से 14.24 तक
चतुर्दशी	बुध	मघा	16.09.20	सिंह	चतुर्दशी श्राद्ध, विष–जल–अग्नि शस्त्रादि हतों का श्राद्ध, देवी कात्यायनी जय कन्या संक्राति प्रवेश 19.8 पुण्य का अगले दिन
अमावस्या	गुरू	पूर्वा फा.	17.09.20	कन्या 15.05	सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध, पितृ विसर्जन, भूले बिछड़ों का श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजा

रोहिणी व्रत : जिस दिन चन्द्रमा अपनी सर्वाधिक प्रिय पत्नी रोहिणी के यहाँ निवास करते हैं, उस दिन विदुषी महिलायें अपने बल पुरूषार्थमय सौन्दर्य वृद्धि, सौभाग्य, सुखोपभोग की कामना से रोहिणी वृत किया करती है। यह व्रत कौन से दिन करना अभीष्ट रहेगा, उसके बारे में प्रत्येक माह में दिया गया है। कहते है रोहिणी ने चन्द्रमा से यह वर प्राप्त किया था कि जो भी मेरे आपके सानिध्य दिवस में व्रत रखकर तारा उदय होने पर विधि विधान सहित पूजन करके अर्ध्य देकर चन्द्रमा सहित रोहिणी का ध्यान करेंगी, उनकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होगी।